विश्व प्राकृतिक धरोहर शिरेतोको

– लोचनी अस्थाना

ग्यारह साल पहले जापान में तीन साल के प्रवास के दौरान फुजि पर्वत पर चढ़ने का सौभाग्य तो मिला लेकिन होक्काइदो जाना नहीं हो पाया था। इस साल महीना भर पहले भी बुकिंग न मिल पाने के कारण जब हिमोत्सव देखना संभव नहीं हुआ तो इन गर्मियों में होक्काइदो के पूर्वोत्तरी शिरेतोको प्रायद्वीप का राष्ट्रीय उद्यान देखने जाने की सोची जिसे युनेस्को, प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व धरोहर घोषित कर चुका है।

जापान का ये वो सुदूर पूर्वोत्तरी क्षेत्र है जहां अनन्त आकाश, अथाह निर्मल सागर और हरियाली में ढकी धरती की गोद में भरपूर जैव विविधता है। कुलाँचें भरते हिरण, ज़रा सी आहट पर भाग निकलने वाली लोमड़ी, और दहशत देते गहरे भूरे रीछ जो मछलियों की तलाश में सागर में छलाँग लगा लें। ओखोत्सक सागर में मिलने वाला अत्यन्त नन्हा जीव क्लिऑन जिसे आम भाषा में सीएन्जिल कहते हैं, वहीं देखने को मिला। बमुश्किल एक सैंटीमीटर लंबा, पारदर्शी पँख और पूँछ के बीच सूक्ष्म गुलाबी देह। वाकई तैरता हुआ नन्हा फरिश्ता सा दिखता था।

रात में नंगी आँख से भी नक्षत्र इतने साफ और इतने पास दिखे कि यकीन नहीं हुआ। चमकीला शुक्र (वीनस), बृहस्पति (जूपीटर), बुध (मर्करी), सप्तऋषि, अंग्रेज़ी अक्षर डब्लु के आकार में दिखने वाले पाँच तारों का समूह काश्यपी, आकाशगंगा के आर पार वैगा और अल्टायर भी देखे जिनका मिलन यहां साल में एक बार तानाबाता की रात यानी सातवें महीने की सातवीं तारीख को माना जाता है।

जहाज़ में सवार हो कर शिरेतोको प्रायद्वीप के सूदूर आखिरी छोर तक जाते हुए ऊँचा चट्टानी तट और ओखोत्सक सागर में गिरते झरने देखने को मिले। इस विश्व धरोहर में एक तरफ पहाडों

और दूसरी तरफ सागर से घिरे, हरियाली से ढके दलदली क्षेत्र में झील देखने जाने का अनुभव अद्भुत रहा। झील तक पहुँचने के लिए लकडी का पुलनुमा रास्ता है। रास्ते के आस पास और नीचे हिरण कुलांचे भर रहे थे और पर्वत शिखर पर आराम फरमाते बादलों के बीच दूर झील में कमल के फूल खिले थे। तेज़ धूप में गर्मी इतनी थी कि छाता खोलना पडा। इस गर्मी में ये कल्पना करना तक मुश्किल था कि कुछ ही महीनों बाद सर्दियाँ आने पर सामने नज़र आ रहे ओखोत्सक सागर की सतह बर्फ में तब्दील हो जाएगी।

कुनाशिरी द्वीप भी देखने को मिला सिर्फ ३० किलोमीटर दूर नज़र आने वाला ये द्वीप उन चार द्वीपों में से एक है जिस पर जापान दावा करता है लेकिन दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से रूस का कब्ज़ा है।

और हाँ यादगार रही इसी प्रायद्वीप के शहर उतोरो में होक्काइदो के मूल निवासी आईनू जनजाति की एक महिला की पारम्परिक हस्तशिल्प की दूकान जिसमें भारत की बाँधनी के सूती स्कार्फ भी थे। भारतीय सूती कपडे. की कद्रदान ने बेहद आत्मीयता से सत्कार करते हुए पीने को खास तरह के पेय का गिलास पेश करते हुए इशारे से बताया कि ये पेट के लिये बहुत मुफीद है। दीवार पर लगे एक बार अखबार में फोटो दिखाते हुए टूटी फूटी अंग्रेज़ी में इतना समझा दिया कि पिछले साल हुए उनके बेटे के विवाह की खबर अखबार में सचित्र छपी थी। लेकिन मैं तो धरती के इस सुदूर उत्तरपूर्वी छोर में भी भारतीय हस्तकला देख कर अभिभूत थी। ❑